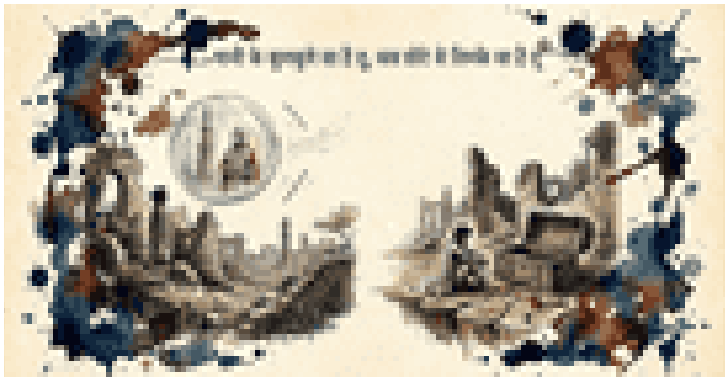
ISSN:2583-8849



सुनीता निमिष सिंह
उदयपुर, राजस्थान

अहंकार और चेतना में संवाद

मैं ही स्वयं सर्वस्व यहाँ हूँ
विशाल मेरा व्यक्तित्व महान
ज्ञानी, समर्थ, वर्चस्व, अनंत
मुझ से ही चलती यह सृष्टि तमाम
बल, बुद्धि और वैभव का मैं
एक अकेला ही शिखर महान
मेरे ही इशारे पर झुकता
यह सारा अवनि और आसमान



शान, शौकत, रुतबे की बात है करता
पर खाली पड़ा खजाना है तू
पानी के बुलबुले सा है तू,
बस छोटे से तिनके सा है तू
हवा का एक झोंका ही
तेरे वजूद पर भारी है
खुद ही खुद का ख़ुदा बन बैठा
कितना बिचारा है तू
पानी के बुलबुले सा है तू
बस छोटे से तिनके सा है तू
जिस मिट्टी पर नाज़ तुझे
वह मिट्टी में ही मिल जानी है
साँसों की डोर टूटते ही
ढह जानी यह झूठी कहानी है
तू ही स्वयं सर्वस्व कहाँ
न ही विशाल तेरा व्यक्तित्व महान
पानी के बुलबुले सा है तू
बस छोटे से तिनके सा है तू।

चेतना

पानी के बुलबुले सा है तू
बस छोटे से तिनके सा है तू
अहम का शहंशाह बन कर बैठा
पर खंडर के तहख़ाने सा है तू
पानी के बुलबुले सा है तू
बस छोटे से तिनके सा है तू
भ्रम का अगर उतरे चोला
बस मैली चादर सा है तू
पानी के बुलबुले सा है तू
बस छोटे से तिनके सा है तू
मीनारों सा कद दिखलाता
पर कच्ची दीवारों सा है तू
पानी के बुलबुले सा है तू
बस छोटे से तिनके सा है तू